2 अगडदत्त–चरियं

इस पाठ का मूल उद्देश्य है कि समृद्धशाली प्राकृत कथा साहित्य में वर्णित नायक एवं नायिका के आदर्श चारित्र से पाठक परिचित हो सकें। कथा के माध्यम से प्राकष्त कथाकारों का उल्लेख और उनकी रचनाशैली को भी व्याख्यायित किया गया है । कथा से प्राकृत भाषा के विभिन्न प्रयोग को देखकर व्याकरण सम्मत उनकी सिद्धि एवं कथा की अलौकिक चमत्मकारपूर्ण घटनाओं की जानकारी कराना पाठ का मुख्य उद्देश्य है। इस कथा का नायक अगडदत्त अवारा, सहज, अज्ञानी एवं धूर्त होते हुए भी पराक्रमी, दृडनिश्चयी, कर्त्तव्यपरायण, अतिप्राकृत गुणों से सम्पन्न दर्शाया गया है। इस पाठ के अध्ययन से पाठक निम्न ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

1. प्राकृत कथा साहित्य की परम्परा में अगडदत्त चरियं ग्रंथ का स्थान।
2. नायक अगडत्त के चारित्रिक गुणों का वैशिष्ट्य।
3. ग्रंथ में प्रयुक्त महाराष्ट्री प्राकृत के व्याकरण सम्बन्धी कुछ प्रयोग।

प्राच्य भारतीय वाङ्मय में अगडदत्त–कथा एक अतिशय रमणीय लोककथा है। इसमें साहिसिक प्रेमकथा के प्रमुख रूप उपलब्ध हैं। नारी के अन्तर्बाह्य चरित्र का भी इसमें सुन्दर मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। इस कथा काव्य में अगडदत्त एवं मदनमंजरी के अतिरिक्त भुजँगम चोर, भिल्लपति एवं दुर्योधन चोर जैसे पात्र भी अपना विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योकि उन्होंने जहाँ एक ओर कथा को संघर्षशील एवं रोचक बनाया है, वहीं दूसरी और कथा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान भी दिया है।

इस कथा का नायक अगडदत्त घोर संघर्षों के बीच आशावादी, एकाकी होने पर भी अदम्य साहसी, पराक्रमी, चतुर,तथा मधुरभाषी होने के कारण युग–युग से जनता–जर्नादन में अत्यंत लोकप्रिय रहा है। यही कारण है कि लोक–कहावतों एवं मुहावरों में भी उसका नाम प्रचलित मिलता है। असम्भव कार्य को भी सम्भव कर देने वाले किसी व्यक्ति को हम सहज ही ' अगडदत्त' कह देते हैं।

वस्तुतः सह 'अगडदत्त' और कोई नहीं, प्रस्तुत काव्य–कथा का नायक 'अगडदत्त' ही है।

प्राचीन काल की मौखिक एवं लिखित लोककथाओं में यत्र–तत्र बिखरे अगडदत्त–कथा के बीजों को समेटकर तीसरी–चौथी सदी के महान् प्राकष्त–गद्य लेखक आचार्य संघदासगणि ने अपनी रचना 'वसुदेवहिण्डी' में इस कथा को सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप प्रदान किया। और फिर उसी आधार पर आचार्य शान्तिसूरि ने 'उत्तराध्ययनसूत्र' (चौथे सूत्र की छठी गाथा की टीका) में इसका अंकन कियां उसी के आधार पर 12 वीं सदी के आचार्य देवेन्द्रगणि (अपर नाम नेमिचन्द्रसूरि) ने इसे और भी अधिक रोचक एवं विशद बनाया। उन्होंने इस कथानक को घटना–प्रधान, अलौकिक, चमत्कार–पूर्ण, अत्यधिक सरस एवं मार्मिक तो बनाया ही, साथ ही रस, अलंकार एवं रीति और गुणों से भी समन्वित कर इसे एक सुन्दर अलंकृत काव्य का भी रूप प्रदान किया।

प्रस्तुत कथानक के माध्यम से कवि देवेन्द्रगणि ने इस सिव्द्धांत की स्थापना की है कि व्यतिव एवं चारित्र से विहिन मानव भी योग्य परिस्थिति एवं वातावरण प्राप्त कर उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच सकता है। प्रारम्भ में अगडदत्त एक अवारा, अज्ञानी और धूर्त युवक के रूप में हमारे सम्मुख आता है, पर 'संगत से गुण होत है' की कहावत के अनुसार, वाराणसी में एक सद्गुरू का सम्पर्क प्राप्त होते ही उनका जीवन सर्वथा परिवर्तित हो जाता है और वह कर्त्तव्यनिष्ठ, कष्टसहिष्णु, अथक परिश्रमी, दयालु एवं सदुद्देश्य की सिद्धि के हेतु **'शरीरंपातयामि, कार्यं साधयामि वा'** का सिद्धांत अपनाते हुए दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान युग सन्दर्भों में यह रचना अपना विशेष महत्त्व रखती है। इसका कथानक अत्यंत सरल एवं मार्मिक होने के साथ ही चरित्र–निर्माण में सहायक, सत्कार्य–प्रेरक एवं विचारोत्तेजक है, जिससे इसकी उपादेयता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

'अगडदत्तकहा' की भाषा महाराष्ट्री–प्राकृत है, किन्तु यह 'सेतुबन्ध' 'गउडवहो' 'लीलावई' प्रभृति

महाकाव्यों की भाषा महाराष्ट्री–प्राकृत से कुछ भिन्न है। वस्तुतः यह रचना तत्कालीन छात्र–समुदाय के चरित्र निर्माण की दृष्टि से लिखी गई होगी। जो आज भी उस उद्देश्य की पूर्ति में समर्थ है।

अत्थि जए सुपसिद्धं संखउरं पुरवरं गुणसमिद्धं।
तम्मि य राया जणजणियतोसओ सुंदरो नामं।।1।।

शब्दार्थ – जए=संसार में। संखउरं=शंखपुर नाम का नगर। पुरवरं = नगरों में श्रेष्ठ। गुणसमिद्ध =गुणसमृद्ध। राया= राजा। जणजणियतोसओ =जनता में संतोष उत्पन्न करने वाला। सुपसिद्धं = सुप्रसिद्ध।

अर्थ – संसार में सुप्रसिद्ध, गुणसमष्द्ध एवं नगरों में श्रेष्ठ शंखपुर नाम कर नगर था, जहाँ जनता में सन्तोष उत्पन्न करने वाला सुन्दर नाम का राजा राज्य करता था।

तस्स कुलरूवसरिसी समग्गजणजणियलोयणाणंदा।
अंतेउरस्स पढमा सुलसा नामेण वरभज्जा।।2।।

शब्दार्थ – कुलरूवसरिसी= कुल एवं रूप में सदृश। समग्ग–जण–लोयणाणंदा= सभी लोगों में आँखों को आनन्दित (तृप्त करने वाली)। अंतेउरस्स = अन्तःपुर की। पढमा= प्रथम। वरभज्जा = श्रेष्ठ रानी।

अर्थ –उस राजा की, कुल एवं रूप में समान, समस्त लोगों की आंखों को आनंदित (तृप्त) करने वाली तथा अन्तःपुर मूं प्रधान सुलसा नाम की श्रेष्ठ पत्नी थी।

तीए कुच्छिपसूओ पुत्तो नामेण अगडदत्तो।
अणुदियहं सो पवरं वड्ढंतो जोव्वणं पत्तो।।3।।

शब्दार्थ – कुच्छिपसूओ =कुक्षि (कोख) से उत्पन्न। अणुदियहं =रात दिन। पवरं =श्रेष्ठ। वड्ढंतो = बढ़ता हुआ। जोव्वणं =यौवन। पत्तो= प्राप्त हुआ। केरिसो =कैसा।

अर्थ – उस रानी की कोख से उत्पन्न अगडदत्त नाम का एक पुत्र था। वह प्रतिदिन बढ़ता हुआ युवावस्था को प्राप्त हुआ।

सो य केरिसो –

धम्मत्थदयारहिओ गुरूवयणविवज्जिओ अलियवाई।
पररमणिरमणकामो निस्संको माणसोंडी रो।।4।।

शब्दार्थ – धम्मत्थदयारहियो= धर्म, अर्थ और दया से रहित। गुरूवयणबिबज्जिओ= गुरू के वचन की अवहेलना करने वाला। अलियवाई=झूठ बोलने वाला। पररमणिरमण कामो= दूसरों की स्त्रियों के साथ रमने की इच्छा करने वाला। निस्संको=निडर। माणसोंडीरो= अन्यंत घमण्डी।

अर्थ – वह अगडदत्त धर्म, अर्थ और दया से रहित था, गुरु के वचन की अवहेलना करता था, झूठ बोलता था, दूसरों की स्त्रियों के साथ रमण करने की कामना रखनेवाला वह निडर और अत्यन्त घमंड़ी था।

मज्जं पिएइ जूयं रमेइ पिसियं महुं च भक्खेइ।
नडचेडयवेसाविंदपरिगओ भमइ पुरमज्झे।।5।।

शब्दार्थ – मज्जं= शराब। पिएइ=पीता था। रमेइ=खेलता था। पिसियं=मांस। महुं= मधु, शहद। भक्खेइ= खाता था। नड=नट। चेडय =चेटक। विंद = बृन्द, समूह। परिगओ=परिवेष्टित। पुरमज्झे= नगर के बीच।

अर्थ – वह अगडदत्त शराब पीता था, जुआ खेलता था, मांस और मधु (शहद) खाता था, इतना ही नहीं, वह नट, चेटक और वेश्याओ के साथ नगर के बीच घूमा करता था।

अन्नम्मि दिणे रन्नो पुरवरलोएण वइयरो सिट्ठो।
जह कुमरेण नराहिव नयरे असमंजसं विहियं।।6।।

शब्दार्थ – अन्नमि दिणे =अन्य किसी एक दिन। रन्नो=राजा के लिए, राजा से। वइयरो= घटना। सिट्ठो= कही। जह=जैसा। कुमरेण=कुमार के द्वारा। नराहिवनयरे=राजा के नगर में। असमंजसं= असमंजस। विहियं= किया ळें?

अर्थ – अन्य किसी एक दिन नगर के लोगों ने राजा से वह घटना इस प्रकार कही कि कुमार अगडदत्त के अशोभनीय कार्यों ने राजा के नगर में असमंजस उत्पन्न कर दिया है।

सुणिऊण पउरवयणं राया गुरुकोवजायरत्तच्छो।
फुडभिउडिभासुरसिरो एयं भणिउं समाढत्तो।।7।।

शब्दार्थ – सुणिऊण = सुनकर। पउरवयणं=नागरिकों के वचनों को। गुरूकोवजायरत्तच्छो= अत्यन्त क्रोध के कारण लाल नेत्रवाला। फुडभिउडिभासुरसिरो= भौंहों को टेढ़ा कर और सिर को डरावना बनाकर। समाढत्तो=आरम्भ किया।
अर्थ – नागरिकों के वचनों को सुनकर अत्यन्त क्रोध के कारण जिनके नेत्र लाल हो गए हैं, ऐसे राजा ने भौहें टेढ़ी कर और सिर को डरावना बनाकर इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया।

रे रे भणह कुमारं सिग्घं चिय वज्जिऊण मह विसयं।
अन्नत्थ कुणसु गमणं मा भणसु य जं न कहियं ति।।8।।

शब्दार्थ – भणह=कहो। सिग्घं= शीघ्र। चिय =ही। वज्जिऊण=छोड़कर। मह=मेरे। विसयं=देश को। अन्नत्थ=अन्यत्र। भणसु=कहो।
अर्थ – राजा ने कहा : ''अरे, उपस्थित सेवको, अगडदत्त से जाकर कहो कि ' वह शीघ्र ही मेरे देश को छोड़ कर चला जाय।' ऐसा न हो कि मैंने जो कहा है, वह उससे न कहो।''

नाऊण वइयरं सो कुमरो चइऊण नियपुरं रम्मं।
खग्गसहाओ चलिओ गुरूमाणपवड्ढियामरिसो।।9।।

शब्दार्थ – नाऊण=जानकर। वइयरं=घटना, प्रसंग। चउऊण=छोड़कर। रम्मं=रम्य, सुन्दर। खग्गसहाओ=एकमात्र तलवार की सहायता वाला। गुरुमाणपवड्ढियामरिसो= अभिमान की अधिकता से जिसका क्रोध बढ़ गया है।
अर्थ – अभिमान की अधिकता से जिसका क्रोध बढ़ गया है, ऐसा वह कुमार अगडदत्त उस वष्तान्त को जानकर एकमात्र तलवार के सहारे अपने सुन्दर नगर को छोड़कर चल पड़ा।

लंघित्ता गिरिसरिकाणणाइं पुरगोट्टगामवंदाइं।
नियनयराओ दूरे पत्तो वाणारसिं नयरिं।।10।।

शब्दार्थ – लंघित्ता=लाँघकर। गिरिसरिकाणणाइं=पर्वत, नदी, वन आदि को। पुरगोट्ठगामवंदाइं= नगर, गोष्ठ एवं ग्रामों के समूह आदि को। नियनयराओ= अपने नगर से।
अर्थ – वह अगडदत्त पर्वत, नदी, वन, नगर, गोष्ठ, ग्राम आदि को लांघता हुआ अपने नगर से दूर वाराणसी नगरी पहुँचा।

तियचच्चरमाईसु असहाओ भमइ नयरमज्झम्मि।
चित्ते अमरिसजुत्तो करि व्व जूहाउ परिभट्ठो।।11।।

शब्दार्थ – तियचच्चरमाईसुं=तिराहों और चौराहों पर। असहाओ=असहाय। अमरिसजुत्तो=क्षुब्ध। करि व्व=हाथी के समान। जूहाउ= झुण्ड से। परिभट्ठो= परिभ्रष्ट, पृथक्।
अर्थ – झुंड से परिभ्रष्ट हाथी के समान, चित्त से क्षुब्ध वह अगडदत्त वाराणसी नगरी के बीच तिराहों एवं चौराहों पर असहाय होकर घूमने लगा।

हिंडंतेणं च तया पुरीए मग्गेसु रायतणएणं।
बहुतरूणनरसमेओ एक्को किल जाणओ दिट्ठो।।12।।

शब्दार्थ – हिंडंतेणं = घूमता हुआ। तया=उस समय। मग्गेसु=मार्ग में। रायतणएण=राजपुत्र अगडदत्त ने। एक्को=एक। जाणओ= जानकार।
अर्थ – उसी समय, उस राजपुत्र अगडदत्त ने नगर के रास्ते में घूमते हुए बहुत से युवकों के साथ एक जानकार को देखा।

सो य केरिसो –

सत्थत्थकलाकुसलो विउसो भावन्नुओ सुगंभीरो ।
निरओ परोवयारे किवालुओ रूवगुणकलिओ।।13।।

नामेण पवणचंडो वाईणं न उण सीसाणं।
संदणहय्यगयसिक्खं साहिंतो निवसुयाण तहिं।।14।।

शब्दार्थ – सत्थत्कलाकुसओ= शास्त्र, उसके अर्थ और कला में कुशल। विउसो=विद्वान। भावन्नुओ=मनोवैज्ञानिक। निरओ= लीन। परोवयारे=परोपकार में। किवालुओ=कृपालु। सीसाणं=शिषयों के लिए। संदणहयगयसिक्खं=रथ संचालन, घोड़ो की चाल, हस्तिसंचालन और हाथियों को वश में करने की शिक्षा देने वाला। साहिंतो=शिक्षा देता हुआ। निवसुयाण=राजपुत्रों को।

अर्थ – वह जानकार शास्त्र, उसके अर्थ और कलाओं में निपुण, विद्वान्, मनोवैज्ञानिकों, गम्भीर, परोपकार में लीन, दयालु तथा रूप एवं सुन्दर गुणों से युक्त पवनचण्ड नाम से प्रसिद्ध था।

वह अपना नाम प्रतिपक्षियों–विरोधियों के साथ सार्थक करता था, न कि शिष्यों के साथ। वह राजकुमारों को रथ–संचालन, घोड़ों की चाल, हस्तिसंचालन और हाथिओं को वश में करने की शिक्षा देता हुआ वहाँ रहता था।

तस्स समीवम्मि गओ चरणजुयं पणमिउं समासीणो।
कत्तो सि तुमं सुन्दर अह भणिओ पवणचंडेण।।15।।

शब्दार्थ – समीवम्मि= समीप में। गओ=गया। चरणजुयं=चरण युगल को। पणमिउं=प्रणाम कर। समाणीओ= बैठ गया। कत्तो= कहाँ से। अह= इस प्रकार।

अर्थ – वह अगडदत्त उस जानकार पवनचण्ड मुनि के समीप जाकर तथा उनके दोनों चरणों में प्रणाम कर वहीं बैठ गया। उस जानकार मुनि ने इस प्रकार पूछा :'' हे सुन्दर राजकुमार, तुम कहाँ से आये हो ?''

एगंते गंतूणं सखउराओ जहा विणिक्खंतो।
कहिओ तह वुत्तं त्तो कुमरेणं पवणचंडस्स।।16।।

शब्दार्थ – एगंते= एकान्त में। विणिक्खंतो=निकाला। वुत्तंतो=वृतान्त, घटना। कहिओ= कह दिया।

अर्थ – उस कुमार अगडदत्त ने पवनचण्ड नामक उस जानकार मुनि से एकान्त जाकर, शंखपुर नगर से जिस प्रकार निकला था, वह समस्त वृत्तान्त कह दिया।

चृंडेणतओ भणिओ अच्छसु एत्थं कलाउ सिक्खंतो।
परमत्तणो य गुज्झं कस्स वि मा सुयणु पयडेसु।।17।।

शब्दार्थ – चंडेण=पवनचण्ड ने। अच्छसु= रहो। एत्थं= यहीं। सिक्खंतो=सीखते हुए। अत्तणो= अपना। गुज्झं = गोपनीय। कस्स= किसी को भी। सुयणु= सज्जन। पयडेसु=प्रकट करना। परं= लेकिन।

अर्थ – उस पवनचण्ड नामक जानकार मुनि ने अगडदत्त से कहा :'' हे सज्जन, तुम कलाओं को सीखते हुए यहीं रहो। लेकिन, अपना यह गोपनीय वष्तान्त किसी के लिए प्रकट मत करना।

उट्ठेउ उज्झाओ पत्तो गेहम्मि रायसुयसहिओ।
साहेइ महिलियाए एसो मह भाउअसुओ त्ति।।18।।

शब्दार्थ – उट्ठेउं= उठा। उज्झाओ=उपाध्याय, गुरू। गेहम्मि=घर में। साहेइ=कहा। महिलियाए=धर्मपत्नी से। भाउउसुओ=भाई का पुत्र, भतीजा।

अर्थ – वह गुरु पवनचण्ड उठा और उस राजपुत्र अगडदत्त के साथ अपने घर पहुँचा। वहाँ उसने अपनी धर्मपत्नी से कहा : '' यह मेरा भतीजा है।''

ण्हविऊण कुमरवरं दाऊणं पवरवत्थमाभरणं।
तो भोयणावसाणे भणियमिणं पवणचंडेणं।।19।।

शब्दार्थ – हविऊण=स्नान कराकर। पवर=उत्कृष्ट कोटि के। वत्थं= वस्त्र। भोयणावसाने= भोजन करने के बाद। इणं=यह। भणियं=कहा।

अर्थ – उस कुमार श्रेष्ठ को स्नान कराकर तथा उत्कष्ट कोटि के वस्त्र, आभूषण आदि देकर, भोजन के बाद, पवनचण्ड ने उस अगडदत्त से इस प्रकार कहा।

भवणधणं परिवारो संदणतुररयाइ सतियं मज्झं।
सव्वं तुज्झायत्तं विलससु हियइच्छियं कुमर।।20।।

शब्दार्थ – भवणधणं = मकान एवं धन। सन्दण=रथ। तुरयाइ=घोड़े आदि। संतियं= पास में हैं। मज्झ=

मेरे। तुज्झायत्तं=तुम्हारे अधीन। विलससु=उपभोग करो। हियइच्छियं= मन की इच्छा के अनुसार।
अर्थ – पवनचण्ड ने अगडदत्त से इस प्रकार कहा : " हे कुमार ! भवन, धन, रथ, घोड़े आदि जो भी मेरे पास हैं, उन्हें अपने अधीन समझो और उनका अपने मन की इच्छा के अनुसार उपभोग करो।"

एवं सो किर संतुट्ठमाणसो मुक्ककूरववसाओ।
चिट्ठइ तस्सेव घरे सव्वाउ कलाउ सिक्खंतो।।21।।

शब्दार्थ – संतुट्ठमाणसो=सन्तुष्ट मन से। मुक्क=छोड़ दिया। कूर=क्रूर। ववसाओ=व्यवसाय। चिट्ठइ=रहने लगा। सव्वाउ=सभी। किर=निश्चय ही।
अर्थ – इस प्रकार, उस राजकुमार अगडदत्त ने सन्तुष्ट मन से सभी प्रकार के क्रूर कर्मों को छोड दिया और सभी कलाओं को सीखता हुआ उसी के घर में रहने लगा।

गुरूयणगुरूविणय पवन्नमाणसो सयलजणमणाणंदो।
बावत्तरिं कलाओ गेण्हइ थेवेण कालेणं।।22।।

शब्दार्थ – गुरुयण=गुरूजन। पवन्न=संपन्न, युक्त। बावत्तरिं=बहत्तर। गेण्हइ=ग्रहण करने लगा। थेवेण=अल्प, थोड़ा।
अर्थ – गुरुजनों के प्रति अत्यधिक विनय–गुण से युक्त चित्तवाले तथा सभी व्यक्तियों के मन को आनन्दित करने वाले उस राजकुमार ने अल्प काल में ही बहत्तर प्रकार की कलाएँ सीख लीं।

एवं सो कुमरवरो नायकलो परिसमं कुणेमासो।
भवणुज्जाणं चिट्ठइ अणुदियहं तप्परो घणियं।।23।।

शब्दार्थ – नायकलो=कलाओं को जानने वाला। परिसम=परिश्रम। कुणेमाणो=करते हुए। भवणुज्जाणो=भवनोद्यान में। घणियं=अत्याधिक।
अर्थ – इस प्रकार कलाओं का ज्ञाता वह कुमार अगडदत्त परिश्रम करते हुए तथा प्रतिदिन अत्यधिक तत्पर रहते हुए उस भवन के उद्यान में रहने लगा।

उज्जाणस्स समीवे पहाणसेट्ठिस्स संतियं भवणं।
वायायणरमणीयं उत्तुगमईव वित्थिण्णं।।24।।

शब्दार्थ – पहाणसेट्ठिस्स=प्रधान सेठ का। वायायण= झरोखा, खिडकी। उतुंग=ऊँचा। वित्थिण्णं=विस्तृत। अईव= अत्याधिक।
अर्थ – उस उद्यान के समीप ही उस नगर के प्रधान सेठ का घर था। उसके अत्यधिक सुन्दर, उन्नत और विस्तष्त भवन की खिड़की (उसी उद्यान की ओर खुलती) थी।

तत्थत्थि सेट्ठिधूया मणोहरा मयणमंजरी नाम।
सा घरसिरमारूढा अणुदियहं पेच्छए कुमरं।।25।।

शब्दार्थ – घरसिरमारूढा=घर की छत पर बैठकर। पेच्छइ=देखती थी। सेट्ठिधूया=सेठ की पुत्री।
अर्थ – उस नगरसेठ के मदनमंजरी नाम की एक सुन्दर कन्या थी, जो प्रतिदिन अपने घर की छत पर बैठकर उस कुमार (अगडदत्त) को देखा करती थी।

अह तम्मि साणुराया अणवरयपलोयणं कुणेमाणी।
विक्खिवइ कुसुमफलपत्तलेटठुए किंपि चिंतंती।।26।।

शब्दार्थ – अह=इसके बाद। अणवरयपलोयणं=एकटक देखना। विक्खिवइ=फेकती थी।लेट्ठुए = कंकडी। साणुराया= अनुरागपूर्वक। कुणेमाणी=करती हुई।
अर्थ – उस राजकुमार के प्रति प्रेम में आसक्त होकर वह मदनमंजरी एकचित होकर उसकी ओर देखती हुई तथा उसी का ध्यान करती हुई उस पर फूल, फल, पत्ते और कंकड़ी फेंका करती थी।

हिययत्थं पि हु बालं कुमरो न निरिक्खए कलारसिओ।
आसंकाए गुरूणं विज्जाए गहणलोभेण।।27।।

शब्दार्थ – हिययत्थं=हृदय में स्थित। बालं= कन्या (मदनमंजरी) को। निरिक्खिए =देखता था। कलारसियो=कला का रसिक। विज्जाए =विद्या के।
अर्थ – गुरू की आशंका से और विद्या ग्रहण करने के लोभ से वह राजकुमार अगडदत्त हष्दय में स्थित

होने पर भी उस कन्या मदनमुंजरी की ओर नजर उठाकर देखता तक न था।

अन्नदिणम्मि तीए वम्महसरपसरविहुरियमणाए।
गहणे कलाण सत्तो पहओ उ असोगगुच्छेणं।।28।।

शब्दार्थ – वम्मह=कामदेव। सरपसर=बाण का प्रसार। विहुरिय मणाए =सन्तप्तचित्त होकर। सत्तो=आसक्त। पहओ=प्रहार किया, फेंका।

अर्थ – अन्य किसी दिन कामदेव के बाण के प्रसार से सन्तप्त होकर उस मदनमंजरी ने कलाओं को ग्रहण करने में संलग्न उस राजकुमार को अशोक का गुच्छा फेंककर मारा।

कुमरेण तम्मि दियहे सा बाला पलोइया य सविसेसं।
कंकेल्लिपल्लवंतरियतणुलया संभमुब्भंता।।29।।

शब्दार्थ – तणूलया=तनुलता। कंकेल्लिपल्लव= कंकेल्लि–लता के पत्ते। अन्तरिय =छिपी हुई। संभमुब्भंता=लज्जा से भरी हुई। पलोइया=देखी गई। तम्मि दियहे=उसी दिन।

अर्थ – राजकुमार अगडदत्त ने उसी दिन कंकेल्लि–लता के पत्ते के समान काँपती हुई सुन्दर शरीरवाली तथा अत्यंत लज्जा से भरी हुई उस मदनमंजरी को विशेष दृष्टि से देखा और सोचने लगा।

चिंतियं च –

किं एसा अमरविलासिणी उ अह होज्ज नागकन्न व्व।
कमल व्व किं नु एसा सरस्सई किं व पच्चक्खा।।30।।

शब्दार्थ – अमरविलासिणी=देवी। उ अह= और अथवा। होज्ज =है। नागकन्न व्व=नागकन्या के समान। कमल व्व= लक्ष्मी के समान। सरस्सइ=सरस्वती। पच्चक्खा=प्रत्यक्ष।

अर्थ – क्या यह कोई देवी है, अथवा नागकन्या?क्या यह लक्ष्मी है, अथवा प्रत्यक्ष सरस्वती ही आ गई है?

अहवा पुच्छामि इमं कज्जेणं केण चिट्ठइ एत्थं।
इय चिंतिऊण हियए कुमरो पयडं इमं भणइ।।31।।

शब्दार्थ – अहवा=अथवा, या फिर। कज्जेण=काम से। चिट्ठइ=बैठी है। पुच्छामि=पूछूँ। पयडं=स्पष्ट रूप से।

अर्थ – या फिर, मैं इससे पूछूँ कि यह किस काम से बैठी है?मन में यह सोचकर वह राजकुमार उससे स्पष्ट रूप से इस प्रकार पूछता है।

का सि तुमं वरबाले ईसिं पयडेसि कीस अप्पाणं।
विज्जगहणासत्तं कीस ममं सुयणु खोभेसि।।32।।

शब्दार्थ – का सि=कौन हो। अप्पाणं=अपने को। कीस=क्यों। ईसिं=क्रोध, ईर्ष्या। ममं= मुझपर। खोभेसि=क्षुब्ध हो रही हो। सुयणु=सुन्दर शरीर वाली।

अर्थ – हे सुन्दर, शरीर वाली श्रेष्ठ कन्ये, तुम कौन हो,?विद्या ग्रहण करने में संलग्न मुझपर क्यों अपनी ईर्ष्या एवं क्षोभ प्रकट कर रही हो?

सुणिउं कुमारवयणं वियसियदिट्ठीए विहसियमुहीए।
पयडंतदंतकिरणावलीए तीए इमं भणियं।।33।।

शब्दार्थ – वियसियदिठ्ठीए = विकसित दृष्टि से। विहसियमुहीए =हँसते हुए मुख से। पयडंतदंतकिरणावलीए = दाँतों की किरणों को प्रकट करती हुई।

अर्थ – उस कुमार अगडदत्त के वचन सुनकर विकसित नेत्रों वाली मदनमंजरी ने हँसी युक्त मुख से अपने दांतों की किरणों को प्रकट करते हुए इस प्रकार कहा।

नररपहाणस्स अहं धूया सेट्ठिस्स बंधुदत्तस्स।
नामेण मयणमंजरी इह चेव विवाहिया नयरे।।34।।

शब्दार्थ – नयरपहाणस्स=नगर के प्रधान। सेटि्ठस्स=सेठ की। धूया=पुत्री। विवाहिया=विवाह हुआ है।

अर्थ – मैं नगर के प्रधान सेठ बन्धुदत्त की कन्या हूँ। मेरा नाम मदनमंजरी है और मेरा विवाह भी इसी नगर में हुआ है।

जद्दिवसाओ दिट्ठो सुन्दर तं कुसुमचावसारिच्छो।
तद्दियहाओ मज्झं असुहतरू वड्ढिओ हियए।।35।।

शब्दार्थ – जद्दिवसाओ=जिस दिन से। कुसुमचावसारिच्छो=कामदेव के समान (सुन्दर)। तद्दियहाओ=उसी दिन से। मज्झं=मेरे। हियए =हृदय में। असुहतरू =दुःख का वृक्ष। वड्ढिओ=बढ़ रहा है।

अर्थ – हे सुन्दर, राजकुमार कामदेव के समान मोहक तुमको जिस दिन से मैंने देखा है, उसी दिन से मेरे हृष्दय में दुःख (कामपीडा) का वक्ष बढ़ रहा है।

जेण –

निद्दा विहु नट्ठा लोयणाण देहम्मि बड्ढिओ दाहो।
असणं पि नो य रूच्चइ गुरूवियणा उत्तममंगम्मि।।36।।

शब्दार्थ – निद्दा=निद्रा, नींद। असण=भोजन। उत्तमंगम्मि=सिर में। नट्ठा=नष्ट। लोयणाण=नेत्रों की। गुरूवियणा= अत्यन्त वेदना। रूच्चइ=रूचता है।

अर्थ – जिससे मेरी आँखों की नींद समाप्त हो गई है, देह में जलन बढ़ गई है, भोजन भी रूचिकर नहीं लग रहा है तथा सिर में अत्यंत वेदना हो रही है।

ताव च्चिय होइ सुहं जाव न कीरइ पिओ जणो को वि।
पियसंगो जेण कओ दुक्खाणं समप्पिओ अप्पा।37।।

शब्दार्थ – ताव च्चिय =तभी तक। सुहं=सुख। जाव=जब तक कि। पिओ=प्रिय। पियसंगो=प्रियतम का साथ। अप्पा=अपने को। दुक्खाणं=दुःखों के प्रति। समप्पिओ=समर्पित कर दिया।

अर्थ – सुख तभी तक मिल सकता है, जब तक किसी प्रियजन के साथ संग नहीं हुआ है। और जिसने प्रियजन का संग किया, समझो उसेने दुःखों के प्रति अपने को समर्पित कर दिया है।

पेरिज्जंतो उ पुराकएहि कम्मेहि केहि वि वराओ।
सुहमिच्छंतो दुल्लहजणाणुराए जणो पडए।।38।।

शब्दार्थ – पेरिज्जन्तो=प्रेरित होकर। वराओ=बेचारा। दुल्लह–जणाणुराए = दुर्लभ व्यक्ति के अनुराग। पुराकएहि कम्मेहि=पूर्व कृत् कर्मों के फल से। पडइ=पड जाता है। सुह मिच्छंतो=सुख की इच्छा रखता हुआ।

अर्थ – पूर्वजन्म में किये कर्मों से प्रेरित होकर ही कोई बेचारा व्यक्ति सुख की इच्छा से दुर्लभ व्यक्ति के अनुराग में पड जाता है।

ता जइ मए समाणं संगं न य कुणसि तरूणिमणहरणं।
हीही तुह नियवज्झा फुडं जओ नत्थि मे जीय।।39।।

शब्दार्थ – जीयं=जीवन। जइ=यदि। तरूणिमणहरणं=युवतियों के मन को हरने वाले। मए =मेरे। समाणं=साथ। संगं=समागम। तुह=तुम्हारे सामने। नियवज्झा=आत्महत्या। जओ फुडं=जिससे स्पष्ट हो जाएगा।

अर्थ – यदि तुम मेरे साथ युवतियों के मन को हरण करने वाला समागम नहीं करते हो, तो मैं तुम्हारे सामने ही आत्महत्या कर लूगी और तब स्पष्ट हो जाएगा कि मैं जीवित नहीं हूँ।

सो निसुणिऊण वयणं तीए बालाए चिंतए हियए।
मरइ फुडं चिए एसा मयणमहाजलणदड्ढंगी।।40।।

शब्दार्थ – निसुणिऊण=सुनकर। मयण=मदन, कामदेव। महाजलण=भभभभयंकर अग्नि। दड्ढंगी=जले हुए अंगोवाली।

अर्थ – उस बाला मदनमंजरी के वचनों को सुनकर वह अगडदत्त हृष्दय में इस प्रकार विचारने लगा,, ''काम–रूपी भयंकर अग्नि में जले हुए अंगोवाली यह मंदनमंजरी अब निश्चय ही मर जायेगी।

निसुणिज्जइ पयडमिणं भारहरामायणेसु सत्थेसु।
जह दस कामावत्था होंति फुडं कामुयजणाणं।।41।।

शब्दार्थ – भारह=महाभारत। सत्थेसु=शास्त्रों में। पयडं=प्रकट रूप में। निसुणिज्जइ=सुना जाता है।

कामुयजणाणं=कामुक व्यक्तियों की। कामावत्था=कामावस्था।
अर्थ – महाभारत, रामायण आदि शास्त्रों में यह स्पष्ट ही सुना जाता है कि कामुक व्यक्तियां की दस काम अवस्थाएं होती हैं।

पढमा जणेइ चित्तं बीयाए महइ संगमसुहं ति
दीहुण्हा नीसासा हवंति तइयाए वत्थाए।।42।।

शब्दार्थ – चिंतं=चिन्ता। जणेइ=उत्पन्न करती है। बीयाए =दूसरी। संगमसुहं=संगमसुख की। महइ=अभिलाषा करती है। तइयाए =तीसरी। वत्थाए =अवस्था में। दीहु=दीर्घ। उण्हा=उष्ण। नीसासा=निःश्वास।
अर्थ – ''काम की पहली अवस्था चिन्ता उत्पन्न करती है, दूसरी अवस्था में संगममुख की अभिलाषा होती है और तीसरी अवस्था में दीर्घ और उष्ण निःश्वास चलने लगता है।''

जरयं जणइ चउत्थो पंचमवत्थाए डज्झए अंगं।
न य भोयणं च रूच्वइ छट्टावत्थाए कामिस्स।।43।।

शब्दार्थ – चउत्थी=चौथी। जरयं=ज्वर। डज्झए=जलाती है। छट्टावत्थाए =छठी अवस्था में। कामिस्स=कामी की।
अर्थ – ''काम की चौथी अवस्था में ज्वर उत्पन्न होता है, पाँचवीं अवस्था में शरीर जलने लगता है और छठी अवस्था में कामियों को भोजन रुचिकर नहीं लगता ।''

सत्तमियाए मुच्छा अट्ठमवत्थाए होइ उम्माओ।
पाणाण य संदेहो नवमावत्थाए पत्तस्स।।44।।

शब्दार्थ – सत्तमियाए =सातवीं। मुच्छा=मुर्च्छा। उम्माओ=उन्माद। पत्तस्स=प्राप्त हुए। पाणाण=प्राणों के।
अर्थ – काम की सातवीं अवस्था में कामी मूर्च्छित होने लगता है, आठवीं अवस्था में उसे उन्माद हो आता है। जब वह नवीं अवस्था में पहुँचता है तब उसके प्राणों को बचने में भी सन्देह होने लगता है।

दसमावत्थाए गओ कामी जीवेण मुच्चए नणं।
ता एसा मह विरहे पाणाण वि संसयं काही।।45।।

शब्दार्थ – गओ=पहुँचता है। नूणं=निश्चय ही। मुच्चए =त्याग देता है। संसयं काही=संशय में डाल देगी। मह=मेरे।
अर्थ – जब कामी दसवीं अवस्था में पहुँचता है तब निश्चय ही वह जीवन त्याग देता हैं अतः मेरे विरह में यह मदनमंजरी अपने प्राणों को भी संशय में डाल देगी।

परिभाविऊण हियए रायकुमारेण भावकुसलेणं।
भणिया सिणेहसारं सा बाला महुरवणेण।।46।।

शब्दार्थ – परिभाविऊण=विचार करके। महुरवयणेण=मधुर वचन से। सिणेहसारं=स्नेह का सार। भणिया=कहा।
अर्थ – भावनाकुशल उस राजकुमार ने अपने हष्दय में विचार कर, स्नेह सनी हुई मधुर वाणी में उस बाला से इस प्रकार कहा।

सुन्दरि सुन्दररन्नो सुन्दरचरियस्स विउलकित्तिस्स।
नामेण अगडदत्तं पढमसुयं मं वियाणेहि।।47।।

शब्दार्थ – विउलकित्तिस्स=विपुल कीर्ति वाले। पढमसुयं=प्रथम पुत्र। मं=मुझे। वियाणेहि=जानो।
अर्थ – हे सुन्दरी, सुन्दर आचरण एवं विपुल कीर्तिवाले सुन्दर नाम के राजा के प्रथम पुत्र अगडदत्त के नाम से मुझे जानो।

कलयायरियसमीवं कलगहणत्थं समागओ एत्थ।
पविसिस्सं जम्मि दिणे तए वि घेत्तुं गमिस्सामि।48।।

शब्दार्थ – कलयायरिय =कलाओं के आचार्य। कलगहणत्थं=कलाओं के ग्रहण के लिए। पविसिस्सं=विशेष रूप से सीख लूँगा। घेत्तुं=साथ लेकर। गमिस्सामि=चला जाऊँगा।

अर्थ – कलाओं के आचार्य के समीप कलाओं को ग्रहण करने के लिए ही मैं यहां आया हूँ। जिस दिन मैं इन कलाओं को विशेष रूप से सीख लूँगा उसी दिन मैं तुम्हें भी साथ लेकर चला जाऊँगा।

कह कह वि सा मयच्छी वम्महसरपसरसल्लियसरीरा।
एमाए बहुपयारं भणिऊण कया समासत्था।।49।।

शब्दार्थ – कह कहवि=जिस किसी प्रकार। मयच्छी, मृगाक्षी, हिरनी के समान आँखों वाली। वम्मह=कामदेव। पसर=प्रसार। सर=बाण। सल्लिय =जर्जर। एमाइ=इस प्रकार के। बहुपयारं=बहुत प्रकार से। समासत्था=आश्वस्त।

अर्थ – कामदेव के बाण के प्रसार से जर्जर शरीरवाली उस मृगाक्षी मदनमंजरी को राजकुमार अगडदत्त ने जिस किसी प्रकार बहुत तरह से समझाकर आश्वस्त किया।

सो रायसुओ तत्तो तीए गुरूवरंजियमणो हु।
नियनिलए संपत्तो चिंतंतो संगमोवायं।।50।।

शब्दार्थ – रंजियमाणो=आसक्तचित्त। नियनिलए =अपने घर में। संपत्तो=आया। संगमोवायं=साथ रहने का उपाय।

अर्थ – वह राजकुमार अगडदत्त उस मदनमंजरी के गुण और रूप में आसक्त चित्त होकर तथा उसके साथ रहने का उपाय सोचता हुआ अपने घर आया।

अन्नम्मि दिणे सो रायनंदणो वाहियाए मग्गेणं।
तुरयारूढो वच्चइ ता नयरे कलयलो जाओ।।51।।

शब्दार्थ – वाहियाए =गली के। तुरयारूढो=घोड़े पर बैठा हुआ। वच्चइ=जा रहा था। कलयलो=कोलाहल। अवि य =और भी।

अर्थ – अन्य किसी एक दिन वह राजकुमार अगडदत्त घोड़े पर सवार होकर गली के रास्ते जा रहा था कि उसी समय नगर में कोलाहल मच गया। वह सोचने लगा कि–

अवि य –

किं चलिउ व्व समुद्दो किं वा जलिओ हुयासणो घोरो।
किं पत्तं रिउसेन्नं तडिदंडो निवडिओ किं वा।।52।।

शब्दार्थ – चलिउ=चंचल हो उठा है। हुयासणो=अग्नि। घोरो=भयंकर। किं=अथवा। रिउसेन्नं=शत्रु की सेना। तडिदंडो=बिजली, वज्र। निवडिओ=गिर पड़ा है।

अर्थ – क्या समुद्र में आँधी और तूफान उठ गया है, अथवा क्या भयंकर अग्नि प्रवजलित हो उठी है, अथवा क्या शत्रु की सेना ने आक्रमण कर दिया है अथवा क्या वज्रपात हो गया है?

एत्थंतरम्मि सहसा दिट्ठो कुमरेण विम्हियमणेण।
मयवारणो उ मत्तो निवाडियालाणवरखंभो।।53।।

शब्दार्थ – एत्थंतरम्मि=इसी बीच। मत्तो=मदोन्मत्त। मयवारणो=हाथी। निवाडिया=तोड दिया। आलाण=खूँटा, खम्भा। वर=मजबूत, श्रेष्ठ।

अर्थ – इसी बीच आश्चर्यचकित उस राजकुमार ने सहसा देखा कि एक मदोन्मत हाथी ने श्रेष्ठ खम्भे के समान अपना खूँटा तोड़ दिया है।

मिंठेण वि परिचत्तो मारेंतो सोंडगोयरं पत्तो।
सवडंमुहं चलंतो कालो व्व अकारणे कुद्धो।।54।।

शब्दार्थ – मिंठेण=महावत से। परिचत्तो=परित्यक्त, छोड़ दिया गया। सोंडगोयरं=सूँड़ से देखे गये। मारेंतो=मारते हुए। सबडंमुहं=मुँह की सीध में, सम्मुख। कालो=यमराज।

अर्थ – उस राजकुमार अगडदत्त ने महाव्रत से रहित सूँड की पहुँच तक की वस्तुओं को नष्ट भ्रष्ट करते हुए तथा अकारण ही यमराज के समान क्रुद्ध हाथी को मुँह की सीध में भागते हुए देखा।

तुट्टपयबंधरज्जू संचुण्णियभवणहट्टदेवउलो।
खणमेत्तेण पयंडो सो पत्तो कुमरपुरओ त्ति।।55।।

शब्दार्थ – तुट्ट=तोड़ दिया। रज्जू=रस्सी। संचुण्णिय =चूर–चूर कर दिया गया। हट्ट=बाजार।

देवउलो=देवालय, मंदिर। खणमेतेण=क्षणमात्र में हो। पयण्डो=प्रचण्ड। कुमर पुरओ=कुमार के सम्मुख।
अर्थ – जिसने पैर में बाँधे गये रस्से को तोड़ दिया था तथा घर, बाजार एवं मन्दिरों को चूर–चूर कर दिया था, ऐसा वह प्रचण्ड हाथी, क्षणमात्र में ही उस कुमार अगडदत्त के समीप आ पहुँचा।

तं तारिसरूवधरं कुमरं दट्ठूण नायरजणेहिं।
गहिरसरेणं भणिओ ओसर ओसर करिपहाओं।।56।।

शब्दार्थ – तारिसरूवधरं=असाधारण सौन्दर्य वाले। दट्ठूण=देखकर। गहिरसरेणं=गम्भीर स्वर से। ओसर=हटो। करिपहाओ=हाथी के रास्ते से।
अर्थ – उस असाधारण सौन्दर्य वाले कुमार को देखकर नागरिकों ने गम्भीर स्वर से कहा ''हाथी के रास्ते से हटो, हटो।

कुमरेण वि नियतुरयं परिचउऊण सुदक्खगइगमणं।
हक्कारिओ गइंदो इंदगइंदस्स सारिच्छो।।57।।

शब्दार्थ – परिचइऊण=छोड़कर। सुदक्खगइगमणं=गतिमें अतिशय दक्ष। इंदगइंदस्स=ऐरावत हाथी के। सारिच्छो=समान। गइंदो=गजेन्द्र, गजराज। हक्कारिओ=ललकारा।
अर्थ – कुमार ने भी हर प्रकार की गति में अतिशय दक्ष अपने घोड़े को छोड़कर ऐरावत हाथी के समान उस गजराज को ललकारा।

सुणिउं कुमारसद्दं दंती पज्झरियमयजलपवाहो।
तुरिओ पहाविओ सो कुद्धो कालोव्व कुमरस्स।।58।।

शब्दार्थ – सुणिउं=सुनकर। सद्दं=शब्द को, ललकार को। दंती=हाथी। पज्झरिय =झरते हुए। मयजल=मदजल। पवाहो=प्रवाह। तुरिओ=शीघ्र ही। पहाविओ=दौड़ा।
अर्थ – जिसके गण्डस्थल से मदजल प्रवाहित हो रहा था, ऐसे यमराज के समान क्रुद्ध उस हाथी ने कुमार की ललकार को सुनकर तत्काल वह उसकी ओर ही झपटा।

कुमरेण य पाउरणं संवेल्लेऊण हिट्ठचित्तेणं।
धावंतवारणस्सा सोंडापुरओ उ पक्खित्तं।।59।।

शब्दार्थ – पाउरणं=चादर को। संवेल्लेऊण=लपेटकर। हिट्ठचित्तेण=प्रसन्न चित्त से, बिना किसी भय के। सोंडापुरओ=सूँड के सामने। पक्खित्तं=फेंका। धावंतवारणस्सा=दौड़ते हुए उस हाथी की।
अर्थ – निर्भिक एवं प्रशन्नचित्त उस राजकुमार ने अपनी चादर को लपेटकर झपटते हुए उस हाथी की सूड़ के आगे फेंका।

कोवेण धमधमेंतो दंतच्छोभे य देइ सो तम्मि।
कुमरो वि पिट्ठभाए पहणइ दढमुट्ठिपहरेणं।।60।।

शब्दार्थ – कोवेण=गुस्से से। धमधमेंतो=धम धम की आवाज करता हुआ। दंतच्छोभे=दांतों की टक्कर। पिट्ठभाए =पृष्ठ भाग में, पीठ में। पहणइ=मारा। दढ=दृढ। मुट्ठि=घूँसा। पहरेणं=प्रहार से।
अर्थ – वह हाथी गुस्से से धमधम करता हुआ जब गोल की गई चादर पर दांतों से टक्कर मारने लगा, तभी उस राजकुमार ने भी हाथी की पीठ पर कठोर घूंसे का प्रहार किया।

ता ओधावइ रोवइ चलइ खलइ परिणओ तहा होइ।
परिभमइ चक्कभमणं रोसेण धमधमेंतो सो।।61।।

शब्दार्थ – ता=इसके बाद। ओधावइ=औंधा हो गया। खलइ=लड़खडाते लगा। परिणओ=करवट बदल ली। परिभमइ=घूमने लगा। चक्कभमणं=चक्र के समान घूमना। रोसेणं=क्रोध से।
अर्थ – तत्काल ही वह हाथी उस राजकुमार अगडदत्त के घूँसे के प्रहार से औधा हो गया, दौडने लगा, चलने लगा, लडखडाने लगा, करवटें बदलने लगा, चक्के के समान घूमने लगा और क्रुद्ध होकर धमधमक रने लगा।

अइव महंत वेलं खेल्लावेऊण तं गयं पवरं।
निययवसे काऊण आरूढो ताव खंधम्मि।।62।।

शब्दार्थ – महंतं=बहुत। बेलं=समय। खेल्लावेऊण=खेलाकर।पवरं=श्रेष्ठ। निययवसे= अपने वश में।

काऊणं=करके। आरूढो=चढ़ गया। खंधम्मि=कन्धे पर

अर्थ – तब हाथी को खम्भे में बाँधकर, राजा की आज्ञा से आशंकित हष्दयवाला वह कुमार अगडदत्त नरनाथ के पास पहुँचा।

अह तं गइंदखेडं मणोहरं सयलनयनलोयस्स।
अंतेउरसरिसेणं पलोइयं नरवरिंदेणं।।63।।

शब्दार्थ – गइंदखेडं=हाथी की क्रीड़ाओ को। सरिसेणं=सहित। नरवरिंदेणं=राजा ने।

अर्थ – इसके वाद उस हाथी की मनोहर क्रीडाओं को सारे नगर के लोगों तथा अत:पुर की रानियों, सहित राजा ने देखा।

दट्ठुं कुमरं गयखंधसंठियं सुरवइं व सो राया।
पुच्छइ नियभिच्चयणं को एसो गुणनिही बालो।।64।।
तेएणं अहिमयरो सोमत्तणएण तह य निसिनाहो।
सव्वकलागमकुसलो वाई सूरो सुरूवो य।।65।।

शब्दार्थ – संठिय =बैठे हुए। सुरवइं व=देवों के समान। नियभिच्चएणं=अपने भृत्य से। एसो=यही। गुणनिही=गुणों का खजाना। तेएणं=तेज से। अहिमयरो=सूर्य के समान। सोमत्तणएण=सौम्यभाव से। निसिनाहो=चन्द्रमा। आगम=शास्त्र। वाई=वादी, शास्त्रार्थ में निपुण। सूरो=शूरवीर। सुरूवो=अत्यंत सुन्दर।

अर्थ – हाथी के कंधे पर बैठे हुए देव के समान सुन्दर उस राजकुमार को देखकर राजा ने अपने भष्त्य से पूछा : ''सूर्य के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान सौम्य, समस्त कलाओं और आगमों में कुशल, शास्त्रार्थ में निपुण, शौरवीर और अतिशय रूपवान यह गुण निधि वालक कौन है?''

एक्केण तओ भणियं कलयायरियस्स मंदिरे एसो।
क्लपरिसमं कुणंतो दिट्ठो में तत्थ नरनाह।।66।।

शब्दार्थ – मंदिरे=भवन में। कलपरिसमं=कलाओं में परिश्रम। कुणन्तो=करते हुए। नरनाह=हे नरनाथ, राजन्!

अर्थ – तब, नौकरों में से एक ने उत्तर दिया, हे नर! नाथ कलाचार्य के मंदिर में मैने इसे कलाओं के सीखने में परिश्रम करते हुए देखा है।

तो सो कलयायरिओ नरवइणा पुच्छिओ हरिसिएणं।
को एसो वरपुरिसो गयवरसिक्खाए अइकुसलो।।67।।

शब्दार्थ – पुच्छिओ=पूछा। हरिसिएण=हर्षपूर्वक। वरपुरिसो=श्रेष्ठ पुरूष। गयवरसिक्खाओ=हस्तिकला की शिक्षा में।

अर्थ – इसके बाद, राजा ने हर्षित होकर कलाओ के आचार्य से पूछा, 'श्रेष्ठ हाथियों की शिक्षा में अतिकुशल यह श्रेष्ठ पुरूष कौन है?

अभयं परिमग्गेउं कलयायरिएण कुमरवुत्तं तो।
सविसेसं परिकहिओ नरवइणो बहुजणजुयस्स।।68।।

शब्दार्थ – अभयं=अभयदान। परिमग्गेउं=माँगकर। कुमरवुत्तंतो=कुमार अगडदत्त का वृतान्तं। सविसेसं=विशेष रूप से। परिकहिओ=कहा।

अर्थ – तब कलाओं के आचार्य ने अभयदान मांगकर अनेक लोगों से घिरे हुए राजा से कुमार अगडदत्त का वष्तांत विस्तार पूर्वक कह सुनाया।

तं निसुणिऊण राया नियहियए गरूयतोसमावन्नो।
संपेसइ पडिहारं कुमरं आणेहि ममं पासं।।69।।

शब्दार्थ – निसुणिऊण=सुनकर। नियहियए =अपने हृदय से। गरूयतोसमावन्नो=अत्यंत संतोष को प्राप्त। आणेहि=ले आओ। संपेसइ=भेजा। पडिहारं=प्रतिहारी। मम पासं=मेरे पास।

अर्थ – उसे सुनकर अपने हष्दय में अत्यंत संतोष को प्राप्त उस राजा ने कुमार को अपने पास लाने के लिए एक प्रतिहारी को प्रेषित किया।

गयखंधपरिट्ठियओ अह सो भणिओ य दारवालेणं।
हक्कारइ नरनाहो आगच्छसु कुमर रायउलं।।70।।

शब्दार्थ – गयखंधपरिट्ठियओ=हाथी के कन्धे पर बैठा हुआ। दारवालेणं=द्वारपाल ने। हक्कारइ=बुला रहे हैं। रायउलं=राज दरबार में।

अर्थ – उस प्रतिहारी ने हाथी के कंधे पर बैठे हुए उस कुमार से इस प्रकार कहा! "हे कुमार, नरनाथ आपको बुला रहे है आप राजदरवार में चले।

रायाएसेण तओ हत्थिं खंभम्मि आगलेऊणं।
कुमरो ससंकहियओ पत्तो नरनाहपासम्मि।।71।।

शब्दार्थ – रायाएसेण=राजा के आदेश से। खंभम्मि=खम्भे में। आगलेऊण=बाँधकर। ससंकहियओ=आशंकित हृदय वाला। पत्तो=पहुँचा।

अर्थ – तब, हाथी को खम्भे में बांधकर राजा की आज्ञा से आशंकित हष्दय वाला वह कुमार नरनाथ के पास पहुँचा।

जाणूकरूत्तमंगे महीए विणिहित्तु गरूयविणाएणं।
जाव न कुणइ पणामं अवगूढो ताव सो रन्ना।।72।।

शब्दार्थ – जाण्करूत्तमंगे=घुटना, हाथ एवं माथा। महीए =भूमि पर। विणिहित्तुं=टेककर, रखकर। गरूयविणएणं=अत्यंत विनयपूर्वक। जाव=जब। कुणइ=किया। पणामं=प्रणाम।अवगूढो=गले से लगा लिया।

अर्थ – अत्यंत विनय के साथ कुमार पष्थ्वी पर झुककर तथा घुटने टेक कर जब राजा को प्रणाम ही नहीं कर पाया था कि राजा ने उसे अपने गले से लगा लिया था।

तंबोलासणसंमाणदाणपूयाइपूइओ अहियं।
कुमरो पसन्नहियओ उवविट्ठो रायपासम्मि।।73।।

शब्दार्थ – तंबोल= पान। आसण=आसन। संमाण=सम्मान। दाण=दान, भेंट। पूइओ=सत्कार किया। अहियं=अधिक। उवविट्ठो=बैठ गया।

अर्थ – पान, आसन, सम्मान, दान, पूजा आदि से अत्याधिक सम्मानित कुमार प्रशन्न हष्दय से राजा के पास बैठ गया।

इसके बाद राजा ने सोचा ! यह तो निश्चय ही कोई उत्त्म पुरूष है क्योंकि–

अगडदत्त कथा के प्रश्न–

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. अगडदत्तचरियं के रचनाकार का नाम है–
(क) महेश्वरसूरि (ख) नेमिचन्द्र सूरि
(ग) देवेन्द्रगणि (घ) वसुनंदि (ग)

2. देवेन्द्रगणि की रचना का नाम है?
(क) कंसवहो (ख) लीलावई
(ग) मुनिचंद (घ) अगडदत्त (घ)

3. अगडदत्त किसका पुत्र था?
(क) सुलसा (ख) सुषमा
(ग) सीमा (घ) गरिमा (क)

4. अगडदत्त धर्म, अर्थ, दया से रहित था क्या सही है। (नहीं)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न–

1. निडर एवं घमंडी कौन था? (अगडत्त)
2. मदनसुन्दरी का किससे प्रेम हो गया था? (अगडत्त)
3. हाथी को किसने वश में किया? (अगडत्त)
4. शंखपुर नगर से बाहर अगडदत्त को किसने निकाला? (पवनचण्ड)

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

1. शंखपुर का राजा कौन था?	(सुन्दर)
2. अगडदत्त उत्तम पुरुष है किसने कहा?	(राजा ने)
3. व्यवसाय का मूल–––––––।	(लक्ष्मी)
4. सुखों का –––––––धर्म है।	(मूल)

जोड़े बनाएँ–

(क) अगडदत्त की माता	(क) सुन्दर कन्या
(ख) मदनसुन्दरी	(ख) सुलसा
(ग) गुस्से से धमधम	(ख) अवस्थाएं
(घ) काम–वासना की दशा	(घ) हाथी करता।